

॥ ६७ ॥ प्रतीपप्रातिप्रत्येनअभिधावद्भिःसर्वदिग्भ्यःसमागतैः॥ ६८ ॥ आधिरथेः अधिरथपुत्रस्य सोमसूर्यसाहचर्यात्प्रकर्षेणआतीतियोगाच्चप्रभोवन्दिःतेषांत्रयाणामंशुभिर्मयूखैः॥ ६९ ॥ मंदोदुर्योध
स्वबाहुबलमाश्रित्यमुहूर्त्तमपिसंजय॥ तस्यनाहंवधंमन्येदेवैरपिसवासवैः॥ ७० ॥ प्रतीपमभिधावद्भिःकिंपुनस्तातपांडवैः॥ नहिज्यांसंस्पृशानस्यतलत्रेवापि
गृह्णतः॥ ७१ ॥ पुमानाधिरथेःस्थातुंकश्चित्सुमुखतोहति॥ अपिस्यान्मेदिनीहीनासोमसूर्यप्रभांशुभिः॥ ७२ ॥ नवधःपुरुषेद्रस्यसंयुगेष्वपलायिनः॥ येनमं
दःसहायेनभ्रात्रादुःशासनेनच॥ ७३ ॥ वामुदेवस्यदुर्बुद्धिःप्रत्याख्यानमरोचत॥ सननं वषभस्कंधं कर्णं दृष्ट्वा निपातितं॥ ७४ ॥ दुःशासनंचनिहतंमन्येशोच
तिपुत्रकः॥ हतंवैकर्त्तनंश्रुत्वाद्वैरथेसव्यसाचिना॥ ७५ ॥ जयतःपांडवान्दृष्ट्वाकिंस्विदुर्योधनोब्रवीत्॥ दुर्मर्षणंहंतं दृष्ट्वा वषभसेनंचसंयुगे॥ ७६ ॥ प्रभमं
चवलं दृष्ट्वा वध्यमानं महारथैः॥ पराङ्मुखं श्रराजस्तपलायनपरायणान्॥ ७७ ॥ विद्रुतानरथिनो दृष्ट्वा मन्येशोचतिपुत्रकः॥ अनेयश्चाभिमानीचदुर्बुद्धिर
जितेंद्रियः॥ ७८ ॥ हतोत्साहं बलं दृष्ट्वा किंस्विदुर्योधनोब्रवीत्॥ स्वयंवैरंमहत्कृत्वा वार्यमाणःसुहृद्रणैः॥ ७९ ॥ प्रधनेहतभूयिष्ठैःकिंस्विदुर्योधनोब्रवीत्॥
भ्रातरं निहतं दृष्ट्वा भीमसेनेन संयुगे॥ ८० ॥ रुधिरपीयमानेचकिंस्विदुर्योधनोब्रवीत्॥ सहगांधारा राजेन सभायां यदभाषत॥ ८१ ॥ कर्णोर्जुनं रणे हंता हतेत
स्मिन् किमब्रवीत्॥ द्यूतं कृत्वा पुरा हशेवं च यित्वा च पांडवान्॥ ८२ ॥ शकुनिःसौ बलस्तातहतेकर्णे किमब्रवीत्॥ कृतवर्मानमहेष्वासःसाल्वतानां महारथः॥ ८३ ॥
हतंवैकर्त्तनं दृष्ट्वा हार्दिक्यः किमभाषत॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्यायस्यशिक्षामुपासते॥ ८४ ॥ धनुर्वेदं चिकीर्षतो द्रोणे पुत्रस्यधीमतः॥ युवारूपेण संपन्नो दर्श
नीयोमहायशः॥ ८५ ॥ अश्वत्थामाहतेकर्णे किमभाषत संजय॥ आचार्यो यो धनुर्वेदो गौतमो रथसत्तमः॥ ८६ ॥ कृपःशारद्वतस्तातहतेकर्णे किमब्रवीत्॥
मद्राजोमहेष्वासःशल्यःसमितिशोभनः॥ ८७ ॥ दृष्ट्वा विनिहतं कर्णं सारथ्ये रथिनां वरः॥ किमभाषत सौवीरो मद्राणामधिपो बली॥ ८८ ॥ दृष्ट्वा विनिहतं
सर्वेयोधा वारणदुर्जयाः॥ ये च केचन राजानःपृथिव्यां योद्धुमागताः॥ वैकर्त्तनं हंतं दृष्ट्वा काकान्यभाषंत संजय॥ ८९ ॥ द्रोणे तु निहते वीरे रथव्याघ्रेन र्षभे॥ केवा
मुखमनीकानामासन्संजयभागशः॥ ९० ॥ मद्राजःकथंशल्यो नियुक्तो रथिनां वरः॥ वैकर्त्तनस्य सारथ्ये तन्ममाचक्ष्व संजय॥ ९१ ॥

नः॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ प्राङ्मुखानिति पाठे निवर्तितमुखात् प्रत्यङ्मुखःकौरवाःयदिपलायंते तदा प्राङ्मुख एव भवन्तीत्यर्थः॥ ९५ ॥ अनेयःअशिक्षणीयः यतो भिमानी विद्वत्त्वाभिमानो अतएव
दुर्बुद्धिःहितमजानन्॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥